आमुख

बाल्यकाल से ही मैं भारतमाता की अनन्य उपासिका बीरंगना इंदिरागांधी के जीवन चरित्र से बहुत प्रभावित थी। उनकी विजय गाथायें मैंने कर्णपर्मपरा सुन रखी थीं। देश के राजनीतिक हिंसाओं की रक्षा के लिये मेरे पिता डा. सुधाकर गणेश जी ने इंदिरागांधी के साथ अनेक आंदोलनों में संग्रह किया है। मैंने अपने पिता के द्वारा इंदिरागांधी के साथ किये गये कार्यों की गाथा सुनकर अत्यधिक प्रभावित हुयी, और उसे आत्मीयता के साथ आत्मसात किया, उनके कृत्यों को आगे बढ़ाने के सन्दर्भ में उनके योगदान के आयाम को विस्तारिकरण एवं आज के परिस्थितियों में उनकी प्रांसणिकताओं बनी रहें और इतिहास में अवर्गीय एवं अलेखनीय सिद्ध हो सके इस हेतु मैं अपनी उत्कषणा को रोक नहीं सकी और श्रीमती इंदिरा गांधी को ही अपना आदर्श मानकर शोध का विषय बनाने का निश्चय किया।

साहित्य का विगतिकर्ष होने के कारण मेरी परिधि सीमित थी। किसी महाकाव्य को आधार बनाकर ही मैं शोधकार्यों में प्रवृत्त हो सकती थी। मैंने अपनी यह उत्कषणा अपने पिता के समक्ष रखी, उन्होंने इसके समाधान के लिये मुझे आचार्य डा. राजेंद्र मिश्र के अनुसार ले गये। आचार्य चवर ने सदा: ही इस समस्या का समाधान कर दिया, उन्होंने कहा किन्तु होने की आवश्यकता नहीं है। आचार्य सत्याग्रह शाश्वत विरामित इंदिरागांधी चरित महाकाव्य उपलब्ध है, आप उसी को आधार बनाकर अपनी जिज्ञासा का शमन कर सकती हैं। इस प्रकार इंदिरागांधीचरितम महाकाव्य का साहित्यिक अनुशीलन मेरा शोध विषय निर्धारित हुआ।

पूर्वप्रथामन् माननीय अन्तल बिहारी बाजपेयी ने संसद में श्रीमती इंदिरागांधी
को रणचण्डी की उपाधि से संबंधित करते हुये आजादी के बाद प्रथम बीरंगना के रूप में अपने उदार व्यक्त किये थे। इन्दिरागाँवी ने हिंदी को तो राष्ट्रभाषा के रूप में आत्मसात किया था परन्तु संस्कृत को अनेक भाषाओं की जननी तथा अनेक विद्वानों की प्रसूतिभूमि मानकर प्रश्रय दिया। वे आयुर्वेद को भी आधुनिक चिकित्सासंपदा के समक्ष मानती थी। तभी तो आयुर्वेद के स्वतंत्र के लिये १९७८ में विषय की नेता होते हुये भी आयुर्वेद के छात्रों के आन्दोलन का नेतृत्व किया।

इंदिरा जी की ये सब गाथायें जब भी मेरे मन में स्पर्शित होती है जो मुझे रोमाञ्च हो आता है तथा मेरा हृदय पुलित हो उठता है।

अस्तु, २५ समृद्धि संसाक्रिय विद्वान बीरंगना इन्दिरागांवी के जीवन चरित्र का आख्यान उपस्थापित करने वाले इस आधुनिक महाकाव्य को समस्या वर्णित करने के रूप में उपस्थापित करने वाले आचार्य राजेंद्र मिश्र को मैं श्राद्ध: नमन करती हूँ।

अपनी शोध पर्यवेक्षका डा. श्रीमती उषा सिंह जी को मैं सादर प्रणाम करती हूँ जिनकी महती कृपा से यह शोध-प्रबन्ध आकार रूप प्रहर कर पाया।

डा. राममनोहर लोहिया अवधविश्वविद्यालय फैजाबाद के प्रति मैं कोटिए: कृत्वत्त्वा सिद्ध करती हूँ। जिनकी कृपालु स्वीकृति से शोध-प्रबन्ध रचना के लिये मेरा प्रज्ञाकरण हुआ।

परिवार के सदस्यों में सर्वप्रथम बड़े पिताजी श्री अमरनाथ दुबे तथा पिता डा. सुधाकर पाण्डेय और माता श्रीमती उपाधिका पाण्डेय को अनेकसा: प्रणाम करती हूँ, जिनके स्नेहित आशीर्वाद से शोधकार्य निर्धारित सम्पन्न हुआ। साथ ही अपने पति श्री अरुण कुमार पाण्डेय, जिन्होंने सतत सहयोग किया तथा शोधकार्य सम्पन्न करने की तीव्र उद्देश्य दी और शोध को अवधि में मुझे गार्हस्थ्य के भार से
मुक्त रखा, मैं बार-बार प्रणाम एवं धन्यवाद देती हूँ, जिनके अप्रतिम सहयोग एवं प्रेरणा के बिना शोधकार्य सम्पन्न होना संभव नहीं था।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध में मैं ने यथार्थित समस्त उपलब्ध साधनों का उपयोग करते हिन्दी से संबंधित समस्त तथ्यों का प्रस्तुतीकरण करते हुये महाकाव्य के साहित्यिक पक्ष को भी उद्धृतित करने का पूर्ण प्रयास किया, आशा है विद्वत्व वर्ग में यह शोधप्रबंध आशीर्वाद प्राप्त कर सकेगा।